ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 27 बुलेटिन अवधिः 04–08 अप्रैल, 2017 दिनःसोमवार दिनाँकः 03 अप्रैल 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	04–04–2017	05–04–2017	06–04–2017	07–04–2017	08–04–2017
वर्षा (मिमी0)	0	5	12	10	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	26	24	22	22	24
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	12	12	11	10
बादल आच्छादन	बादल	घने बादल	घने बादल	बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	90	90	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	55	60	60	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	06	08	10	08	06
वायु की दिशा	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

आगामी 05 से 07 अप्रैल को हल्की वर्षा होने तथा आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (27 मार्च से **02 अप्रैल** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही घने बादल छाये रहे व वर्षा नहीं हुई तथा अधिकतम तापमान 25.2 से 27.2 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 11.8 से 13.2 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- चारा फसलों में सिंचाई का प्रबंध करें।
- बसंतकालीन गन्ने में कल्ले निकलने की अवस्था में गुड़ाई करने के एक हफ्ते बाद सिंचाई करें एवं मैट्रीब्यूजीन/एट्राजीन की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा नत्रजन की बची हुई 1/3 मात्रा का प्रयोग करें व खरपतवारों का नियंत्रण करें।
- दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई करें।
- गेहूँ की फसल मे चूर्णिलासिता का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सरसों की फसल की कटाई एवं मड़ाई करें।

उद्यान प्रबन्धः

- पॉलीहाउस में तैयार खीरा एवं चप्पन कद्दू की पौध का रोपण मुख्य खेत में करें। ध्यान रहे थैलियों की मिट्टी प्लास्टिक अलग करते समय न हिले–डुले।
- समुद्र तल से 6000 फीट से कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों मे यदि टमाटर, बैंगन एवं शिमला मिर्च की पौध तैयार हो गयी हो का प्रतिरोपण अपराहन में करें। प्रतिरोपण के पश्चात् सिंचाई कर लें। नमी संरक्षण के लिए प्रतिरोपित पौध को अस्थानीय स्तर पर उपलब्ध जैविक पलवार पदार्थों की एक मोटी परत हर पौंध में बिछा दें।
- घाटी क्षेत्रों में जहाँ मटर की फसल तैयार हो गयी हो में हरी फलियों की तुड़ाई करें।
- यदि आलू की फसल अंकुरित हो गयी है तथा 20–25 दिन की फसल हो तो उसमें यूरिया की टॉप ड्रेसिंग कर मिट्टी चढ़ाए। नमी संरक्षण होतु नालियों में 8–10 से0मी0 पलवार पदार्थ की मोटी परत बिछा दें।
- सिंचित घाटी क्षेत्रो में सब्जी फ्रासबीन किस्म अर्का कोमल या कन्टेण्डर की वुबाई करे।
- टमाटर में झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 2.5 ग्राम/ली0 की दर से छिड़काव करे।
- मध्यम एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आडू के पर्णकुंचन रोग की रोक–थाम के लिए कीटनाशक रसायनों का द्वितीय छिड़कारें।
- नर्सरी में ग्राफ्टिंग किये गये पौधों में मूल वृंत से निकलने वाली शाखाओं को तोड़कर अलग करें।
- फल अच्छादन होने के उपरान्त मैंगो हौपर के प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोरपिड का 3 मि0ली0 /10लीटर के हिसाब से आम में छिड़काव करें।
- आड़ू, प्लम, खुमानी आदि गुठलीदार फलों में फल अच्छादन हो गया है तो पेड़ों को ओलो से बचाने के लिए जहाँ तक संभव हो ओला अवरोधी जालियों का प्रयोग करें।
- ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में एप्पल स्कैब रोग के नियंत्रण के लिए आवश्यक छिड़काव करें।
- असिंचित अवस्था में नत्रजन की आधी मात्रा का थालों में प्रयोग कर नमी संक्षरण हेतु पलवार का प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए ताकि उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें। बैठने का स्थान समतल ना होने पर पशु खड़ा रहेगा जिससे वह तनाव में आ सकता है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होगी।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविट्रूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होना, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरो का गोबर के साथ आना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान की जा सकती है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं तथा निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार तत्काल उपचार करायें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर